नागालैंड विश्वविद्यालय
Nagaland University
मानविकी एवं शिक्षा संकाय
School of Humanities and Education
स्नातकोत्तर (एम.ए.) पाठ्यक्रम, हिंदी
Post-Graduation (M.A) Course, Hindi

एम.ए हिंदी पाठ्यक्रम
नागालैंड विश्वविद्यालय

पाठ्यक्रम का उद्देश्य : -

प्रस्तुत स्नातकोत्तर हिंदी पाठ्यक्रम सीबीसीएस पैटर्न के अनुरूप निर्मित किया गया है। पाठ्यक्रम में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को भी शामिल किया गया है। पाठ्यक्रम में हिंदी साहित्य का इतिहास, भाषा-विज्ञान, अनुवाद-विज्ञान और प्रयोजनमूलक हिंदी के साथ ही साथ हिंदी के विविध पहलुओं का संयोजन है, जो कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और नागालैंड विश्वविद्यालय के नियमों का समवेत प्रयास है ।

इस पाठ्यक्रम में कुल इक्कीस (21) इकाई हैं । एक इकाई व्यावसायिक पाठ्यक्रम को लेकर है । यह इकाई (2) क्रेडिट का है। तीसरे सत्र का पाठ्यक्रम (6) इकाइयों में विभक्त है एवं अन्य (5) इकाइयों में विभक्त हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम इकाई पुनः पाँच(5) इकाइयों में विभक्त हैं, जिनमें से चार इकाइयों के पाँच (5) क्रेडिट हैं और एक इकाई - जो दो खण्डों में विभक्त है - को दो (2) क्रेडिट दिया गया है। अंतिम इकाई को वैकल्पिक रखा गया है और यह (5) क्रेडिट का है। विकल्प में से किसी का अध्ययन करना अपेक्षित है। सम्पूर्ण पाठ्यक्रम 88 क्रेडिट का है।

हिंदी साहित्य के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के मुख्य प्रतिफल (Complete Course Outcome) :

-विद्यार्थी को व्यापक रूप से व्यक्त करने की क्षमता में सुधार होगा।
-साहित्यिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहलुओं के अध्ययन के उपरांत आलोचना की समझ विकसित होगी ।
-साहित्य के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परंपरा की जानकारी प्राप्त होगी, जिससे विद्यार्थी राष्ट्र व उसके महत्व की ओर आकर्षित होंगे ।
-हिन्दी भाषा और साहित्य के ज्ञान के उपरांत छात्र भारत में कहीं भी काम कर पाएंगे क्योंकि
हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रभाषा के रूप में भी समाद्रित है।
-हिंदी साहित्य के ज्ञान के माध्यम से छात्र अपना कौशल निर्माण कर सकते हैं। साहित्य-ज्ञान उन्हें रचनात्मक और बौद्धिक विचारों से लैस करेगा।
-हिन्दी उपन्यासों और जीवनियों के माध्यम से हमारी समृद्ध संस्कृति और विरासत को छात्र समझ सकते हैं तथा उसका मूल्यांकन कर सकते हैं।
-गद्द और पद्द के माध्यम से वे दैनंदिन जीवन में उपयोगी मूल्यों के महत्व को समझ सकते हैं, जिससे वे अधिक मानवीय बनेंगे।
-नाटकों को पढ़ने और देखने से वे अच्छे नाटककार और अच्छे अभिनेता बन सकते हैं।
-कबीर, जायसी, सूर, तुलसी एवं मीरा जैसे महत्वपूर्ण कवियों के अध्ययन से विद्यार्थियों के नैतिक और मानवीय मूल्य मजबूत होते हैं। सभी धर्मों और सभी जातियों के लिए सम्मान के साथ वे सद्भाव में रहना सीखते हैं
-हिन्दी साहित्य के अंतर्गत विभिन्न साहित्यिक विधाओं के अध्ययन से विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में वृद्धि होती है। लेखन कौशल अवसरों के द्वार खोलता है। रचनात्मक लेखन के द्वारा वे फ्रीलांसिंग कर रोजागरोन्मुख हो सकते हैं।
-अनुवाद और जनसंचार से जुड़े पाठ्यक्रमों में रुचि रखने वाले विद्यार्थी आगे चलकर अनुवादक और मिडियाकर्मी के रूप में रोजगार पा सकते हैं।
-पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच को बढ़ाएगा।
-विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक कार्यों के संपर्क में आने से भाषा-कौशल का विकास होगा।

- नेट/स्लेट/पीएचडी जैसी परीक्षाओं की तैयारी कर पाएंगे।
-हिंदी साहित्य के माध्यम से समाज को मजबूत करने के लिए नैतिक मूल्यों का विकास कर पाएंगे

1) सत्र -1 - 22
1.1 हिंदी साहित्य का इतिहास 1
1.2 हिंदी भाषा का इतिहास और लिपि
1.3 भारतीय साहित्य सिद्धांत 1
1.4 आधुनिक कविता
1.5 हिंदी नाटक

2) सत्र -2 - 22
2.1 हिंदी साहित्य का इतिहास - 2
2.2 भारतीय साहित्य सिद्धांत -2
2.3 प्रयोजनमूलक हिंदी
2.4 भाषा-विज्ञान
2.5 हिंदी साहित्य में अस्मितामूलक विमर्श

3) सत्र – 3 - 22
3.1 हिंदी साहित्य का इतिहास-3
3.2 हिंदी गद्द: विविध विधाएँ
3.3 अनुवाद-विज्ञान
3.4 भक्तिकालीन-काव्य
3.5 हिंदी निबंध
3.6 हिंदी सिनेमा और साहित्य (व्यावसायिक पाठ्यक्रम) - 2

4) सत्र -4 -22
4.1 पाश्चात्य साहित्यालोचन एवं हिंदी आलोचना
4.2 कथा-साहित्य
4.3 छायावादोत्तर कविता
4.4 लोक-साहित्य
4.5 वैकल्पिक विषय
(1)कबीर
(2)प्रेमचंद
(3) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(4) रामधारी सिंह 'दिनकर'

कुल क्रेडिट – 22+22+22+22+(2) = 88 +(2) (इसमें व्यावसायिक पाठ्यक्रम के ग्रेड नहीं दिए जायेंगे)

<u>सत्र -1</u>

पाठ्यक्रम 1 :- हिंदी साहित्य का इतिहास – 1, Course Code: MAHIN – 101, क्रेडिट-5
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :
हिन्दी साहित्य के इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान प्रदान करना।
इतिहास लेखन, प्रमुख इतिहास ग्रंथ और विभिन्न युगों का विशिष्ट ज्ञान प्रदान करना।
हिन्दी साहित्य के आदिकालीन इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान देना।
पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):
इतिहास लेखन और साहित्यिक इतिहास की समझ विकसित होगी।
हिन्दी के विभिन्न युगों का विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त होगा।
हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक युग का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई 1. साहित्येतिहास की अवधारणा
साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ
इकाई 2. हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा
इकाई 3. हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन और नामकरण
(आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल के सन्दर्भ में)
इकाई 4. आदिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि
आदिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियां
इकाई 5. आदिकालीन साहित्य का वर्गीकरण और सामान्य परिचय
सिद्ध-साहित्य, नाथ-साहित्य, जैन साहित्य, लौकिक साहित्य और रासो-साहित्य

अनुमोदित ग्रन्थ :

हिंदी साहित्य का इतिहास	रामचंद्र शुक्ल
हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास	रामस्वरूप चतुर्वेदी
हिंदी साहित्य के इतिहास की समस्याएँ	अवधेश प्रधान
हिंदी साहित्य की भूमिका	हजारी प्रसाद द्विवेदी
हिंदी साहित्य का आदिकाल	हजारी प्रसाद द्विवेदी
हिंदी साहित्य का अतीत	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
हिदी साहित्य का इतिहास	सं. नगेन्द्र
हिंदी साहित्य का इतिहास दर्शन	नलिन विलोचन शर्मा
साहित्य और इतिहास दृष्टि	मैनेजर पाण्डेय
आचार्य रामचंद्र शुक्ल की इतिहास दृष्टि	महेन्द्रपाल शर्मा
हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	रामकुमार वर्मा
हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास	गणपतिचंद्र गुप्त
हिंदी साहित्य का सरल इतिहास	विश्वनाथ त्रिपाठी
हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास	बच्चन सिंह

पाठ्यक्रम 2 - हिंदी भाषा का इतिहास और लिपि, COURSE CODE: MAHIN – 102, क्रेडिट-5
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :
हिन्दी भाषा के इतिहास, भाषा-परिवार, उनकी संख्या, प्रमुख भाषाओं एवं उनकी प्रवृत्तियों एवं रूपों के अन्तः संबंधों का विश्लेषणात्मक ज्ञान। पुरानी से नई व आधुनिक हिन्दी तक की यात्रा का विश्लेषणात्मक ज्ञान। देवनागरी लिपि के इतिहास, उद्भव एवं विकास, गुण एवं मानकीकरण का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):
इससे भाषा और उसके इतिहास की समझ विकसित होगी।
हिन्दी की एक भाषा के रूप में विकास का विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त होगा।
हिन्दी के विभिन्न रूपों व देवनागरी लिपि के विकास की प्रक्रिया का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई 1- हिंदी भाषा का विकास
प्रमुख भाषा परिवार और हिंदी
हिंदी का प्रारंभिक रूप
अवहट्ठ और पुरानी हिंदी
इकाई 2- हिंदी की प्रमुख विभाषाएँ और बोलियाँ
विभाषा- पूर्वी हिंदी, पश्चिमी हिंदी, बिहारी हिंदी, राजस्थानी हिंदी और पहाड़ी
प्रमुख बोलियाँ – ब्रज, अवधी, भोजपूरी
इकाई 3 – हिंदी भाषा के प्रमुख रूप
रेख्ता, हिन्दवी, दक्खिनी, खड़ी बोली हिंदी, उर्दू और हिन्दुस्तानी
इकाई 4 – आधुनिक युग में हिंदी
अंग्रेजों की भाषानीति, खड़ीबोली आंदोलन, राजभाषा के रूप में हिंदी
इकाई 5 - देवनागरी लिपि: उद्भव एवं विकास, गुण एवं विशेषताएं
लिपि और भाषा
देवनागरी लिपि और हिंदी भाषा का मानकीकरण

अनुमोदित ग्रन्थ:-

हिंदी भाषा का इतिहास	भोलानाथ तिवारी
हिंदी भाषा	हरदेव बाहरी
पुरानी हिंदी	चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'
भारत की भाषा समस्या	रामविलास शर्मा
हिंदी भाषा में अपभ्रंश का योग	नामवर सिंह
हिंदी भाषा का उद्भव और विकास	उदयनारायण तिवारी
हिंदी भाषा विज्ञान	किशोरीदास वाजपेयी
हिंदी भाषा का समाजशास्त्र	रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव
हिंदी भाषा	श्यामसुन्दर दास
भाषा और समाज	रामविलास शर्मा

पाठ्यक्रम - 3 - साहित्य सिद्धांत भारतीय – 1 COURSE CODE: MAHIN – 103, क्रेडिट-5

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

-भारतीय काव्यशास्त्र की संस्कृत पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

-विभिन्न संप्रदायों एवं आचार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करना। रस-संप्रदाय के स्वरूप, निष्पत्ति एवं शक्ति व सीमा का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।

-काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु एवं काव्य-प्रयोजन के माध्यम से इनकी परिभाषाओं, संस्कृत आचार्यों के विभिन्न मतों व अवधारणाओं के विकासात्मक चरणों का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

-भारतीय काव्य शास्त्र की संस्कृत पृष्ठभूमि की समझ विकसित होगी।

-विभिन्न संप्रदायों, आचार्यों एवं उनकी काव्य संबंधी अवधारणाओं का विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त होगा।

-रस संप्रदाय के स्वरूप, निष्पत्ति एवं शक्ति, सीमा व उसके आधुनिक विकास का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

-काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु एवं काव्य-प्रयोजन के माध्यम से इनकी परिभाषाओं, संस्कृत आचार्यों के विभिन्न मतों व अवधारणाओं का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई 1. भारतीय काव्यशास्त्र का परिचय :

काव्यशास्त्र - शब्दार्थ एवं विविध अभिधान, भारतीय

काव्यशास्त्र-ऐतिहासिक सर्वेक्षण, विभिन्न काव्य-सम्प्रदायों का संक्षिप्त-सामान्य परिचय

इकाई 2. रस-सम्प्रदाय

रस की परिभाषा, रस का स्वरुप, रस के अवयव, रस के प्रकार

रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक और उनकी स्थापनाएं, रस सूत्र,

स्थायी भाव और रस, रस-निष्पत्ति और उसके प्रमुख व्याख्याकार

साधारणीकरण की अवधारणा

इकाई 3. रस-सम्प्रदाय

रस सूत्र, स्थायी भाव और रस, रस-निष्पत्ति और उसके

प्रमुख व्याख्याकार, साधारणीकरण की अवधारणा

इकाई 4 काव्य-लक्षण एवं काव्य-हेतु

काव्य के लक्षण - विभिन्न मत, मम्मट के काव्य-लक्षण सम्बन्धी मत

काव्य-हेतु

इकाई 5. काव्य-प्रयोजन

काव्य-प्रयोजन - विभिन्न मत, शब्द-शक्ति, अलंकार और छंद

अनुमोदित ग्रन्थ :

काव्यशास्त्र की भूमिका	डॉ. नगेन्द्र
भारतीय काव्यशास्त्र	सत्यदेव चौधरी
साहित्य चिंतन	देवेन्द्र इस्सर
साहित्य सिद्धांत	रेनेवेलेक व ऑस्टिन वारेन
रससिद्धांत का पुनर्विवेचन	डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त
भारतीय साहित्यशास्त्र	बलदेव उपाध्याय
संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र	गोपीचंद नारंग
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन	सत्यदेव चौधरी एवं शांतिस्वरूप चौधरी
काव्यशास्त्र	भगीरथ मिश्र
भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र	गणपतिचन्द्र गुप्त

पाठ्यक्रम 4. आधुनिक कविता, COURSE CODE – MAHIN – 104, क्रेडिट 5

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

-आधुनिक कविता की पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

-भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त एवं अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के काव्य व काव्यगत विशेषताओं का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

-छायावाद की पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

-छायावाद के चार स्तंभों यथा जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत एवं महादेवी वर्मा की विशिष्ट कविताओं के माध्यम से उनके काव्य एवं विशेषताओं का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

-आधुनिक कविता के अर्थ, स्वरूप, उद्भव एवं विकास की समझ विकसित होगी।

-आधुनिक कविता के अंतर्गत ही छायावाद की उत्पत्ति की परिस्थितियों एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त होगा।

-चयनित कविताओं के माध्यम से हम आधुनिक कविता की एक रूप-रेखा तैयार कर सकेंगे।

इकाई 1. भारतेंदु हरिश्चंद्र: सामान्य परिचय
- प्रेम सरोवर
- नए ज़माने की मुकरी
- हिंदी उन्नति पर व्याख्यान

इकाई 2. मैथिली शरण गुप्त: सामान्य परिचय
- नर हो, न निराश करो मन को
- सखी वे मुझसे कह कर जाते
- साकेत नवम् सर्ग (प्रथम दस पद)

इकाई 3. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
- ब्रज की संध्या, कर्मवीर, प्रिय-प्रवास प्रथम सर्ग - पाठ एवं विवेचन

इकाई 4. छायावाद-1
- जयशंकर प्रसाद
  - बीती विभावरी जाग री, कामायनी (चिंता, श्रद्धा एवं आनंद सर्ग)
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
  - जूही की कली, स्नेह निर्झर बह गया है, मैं अकेला

इकाई 5. छायावाद-2
- सुमित्रानंदन पन्त
  - प्रथम रश्मि, शांत स्निग्ध ज्योत्स्ना उज्जवल, भारत माता ग्राम वासिनी
- महादेवी वर्मा
  - पंथ होने दो अपरिचित, जो तुम आ जाते एक बार, मैं नीर भरी दुःख की बदली

अनुमोदित ग्रन्थ :-

भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ	रामविलास शर्मा
कविता से साक्षात्कार	मलयज
लम्बी कविताओं का रचना-विधान	सं नरेन्द्र मोहन
साकेत – एक अध्ययन	डॉ. नगेन्द्र
निराला की सहित्य साधना	रामविलास शर्मा
कामायनी एक पुनर्विचार	मुक्तिबोध
सुमित्रानंदन पन्त	डॉ. नगेन्द्र
कवि सुमित्रानंदन पन्त	नंददुलारे वाजपेयी
महादेवी वर्मा	इंद्रनाथ मदान
पन्त, प्रसाद और गुप्त	रामधारी सिंह 'दिनकर'
महादेवी	दूधनाथ सिंह

पाठ्यक्रम 5. हिंदी नाटक, COURSE CODE – MAHIN 105, क्रेडिट-2

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

-आधुनिक नाटक की पृष्ठभूमि, परंपरा का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

-भारतेन्दु हरिश्चंद्र एवं मोहन राकेश के नाटककार व्यक्तित्व, उनकी नाट्यदृष्टियों एवं नाटकों की विशिष्टताओं एवं तात्कालिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में उनके एवं उनके नाटकों के महत्व का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

-'अंधेरनगरी' और 'आधे-अधूरे' के भाषिक एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

-आधुनिक नाट्यपरंपरा के उद्भव एवं विकास की समझ विकसित होगी।

-नाटकों के बहाने हम तात्कालिक परिस्थितियों की थाह पा सकेंगे। 'अंधेर नगरी' में व्यक्त सामाजिक यथार्थ पर व्यंग्य और विडंबना तथा 'आधे-अधूरे' के माध्यम से बदलती आर्थिक और सामाजिक परिस्थतियों में एक पारिवार के नैतिक अवमूल्यन एवं उससे उपजी स्थितियों के प्रभाव के बारे में ज्ञान हो सकेगा।

-चयनित नाटकों के माध्यम से हम आधुनिक नाटक के भाषा, शिल्प, मंचन आदि के बारे में जान सकेंगे।

इकाई 1. अंधेर नगरी - भारतेंदु हरिश्चंद्र

इकाई 2. आधे-अधूरे - मोहन राकेश

अनुमोदित ग्रन्थ:-

अंधेर नगरी	भारतेंदु हरिश्चंद्र
आधे-अधूरे	मोहन राकेश
हिंदी नाटक: उद्भव एवं विकास	दशरथ ओझा
रंग - दर्शन	नेमिचंद्र जैन
हिंदी नाटक	बच्चन सिंह
नाटककार भारतेंदु की रंग-परिकल्पना	सतेन्द्र तनेजा
नाटक और रंगमंच	सं. गिरीश रस्तोगी

<u>सत्र 2-</u>

पाठ्यक्रम 6 : हिंदी साहित्य का इतिहास-2, COURSE CODE- MAHIN – 201, क्रेडिट - 5
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :
-हिन्दी साहित्य के इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
-भक्ति काल की समय-सीमा, उदय एवं विकास की पृष्ठभूमि, विभिन्न विद्वानों के मतों का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
-विभिन्न काव्य-धाराओं यथा, सगुण-निर्गुण एवं उनके अंतर्गत आने वाली उपकाव्यधाराओं का विशिष्ट ज्ञान प्रदान करना।
-विभिन्न काव्यधाराओं के प्रमुख कवियों एवं उनके काव्यगत एवं शिल्पगत विशेषताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):
-हिन्दी साहित्य के दूसरे काल- भक्ति काल की समझ विकसित होगी।
-भक्तिकाल के अंतर्गत आने वाले विभिन्न काव्यधाराओं का ज्ञान प्राप्त होगा।
-प्रमुख कवियों के काव्यगत एवं शिल्पगत विशेषताओं का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई 1. भक्तिकाल की पृष्ठभूमि
भक्तिकाल की पृष्ठभूमि (राजनितिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक)
भक्ति आंदोलन के उदय के कारण
भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप
इकाई 2. निर्गुण काव्यधारा
संतकाव्य का वैचारिक आधार और प्रमुख कवि
संतकाव्य की प्रवृत्तियां
सूफी काव्य परम्परा का वैचारिक आधार और प्रमुख कवि
सूफी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां
इकाई 3. सगुण काव्यधारा
रामभक्ति काव्य का वैचारिक आधार और प्रमुख कवि
रामकाव्य की विशेषताएं
कृष्णकाव्य का वैचारिक आधार और प्रमुख कवि
कृष्णकाव्य की विशेषताएं
इकाई 4. रीतिकाल
रीतिकालीन काव्य की पृष्ठभूमि (राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक)
नामकरण की समस्या, रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएं
इकाई 5. रीतिकाल, रीतिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियां, रीतिकाल की देन

अनुमोदित ग्रन्थ :-

हिंदी साहित्य का इतिहास	रामचंद्र शुक्ल
हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास	रामस्वरूप चतुर्वेदी
हिंदी साहित्य के इतिहास की समस्याएँ	अवधेश प्रधान
हिंदी साहित्य की भूमिका	हजारी प्रसाद द्विवेदी
हिंदी साहित्य का आदिकाल	हजारी प्रसाद द्विवेदी
हिंदी साहित्य का अतीत	9 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
हिदी साहित्य का इतिहास	सं. नगेन्द्र
हिंदी साहित्य का इतिहास दर्शन	नलिन विलोचन शर्मा
साहित्य और इतिहास दृष्टि	मेनेजर पाण्डेय

आचार्य रामचंद्र शुक्ल की इतिहास दृष्टि	महेंद्रपाल शर्मा
हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	रामकुमार वर्मा
हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास	गणपतिचंद्र गुप्त
हिंदी साहित्य का सरल इतिहास	विश्वनाथ त्रिपाठी
हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास	बच्चन सिंह
भक्ति जीवन-काव्य और लोक	शिवकुमार मिश्र

पाठ्यक्रम 7 : भारतीय साहित्य सिद्धांत-2, COURSE CODE- MAHIN- 202, क्रेडिट 5
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :
-भारतीय काव्यशास्त्र की संस्कृत पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
-विभिन्न संप्रदायों एवं आचार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- अलंकार, रीति, ध्वनि एवं औचित्य संप्रदाय के स्वरूप एवं शक्ति एवं सीमा का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- भारतीय काव्य-सिद्धांतों के महत्व का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।
पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):
-भारतीय काव्य शास्त्र की संस्कृत पृष्ठभूमि की समझ विकसित होगी।
-विभिन्न संप्रदायों, आचार्यों एवं उनकी काव्य संबंधी अवधारणाओं का विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त होगा।
-अलंकार, रीति, ध्वनि एवं औचित्य संप्रदाय के स्वरूप एवं शक्ति एवं सीमा का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।
-इन भारतीय काव्य-सिद्धांतों का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई 1. अलंकार-सम्प्रदाय
अलंकार सम्प्रदाय : प्रवर्तक और उनकी स्थापनाएं
अलंकार का सामान्य परिचय
अलंकार सिद्धांत का औचित्य
इकाई 2. रीति-सम्प्रदाय
रीति सिद्धांत का अर्थ और उनकी स्थापनाएं
आचार्य वामन का गुण-विवेचन, गुण-रीति सम्बन्धी विवेचन
इकाई 3. ध्वनि-सम्प्रदाय
ध्वनि से अभिप्राय और उनकी स्थापनाएं
काव्य के भेद ध्वनि के आधार पर
इकाई 4. वक्रोक्ति-सम्प्रदाय
वक्रोक्ति-सम्प्रदाय के प्रवर्तक और मूल-स्थापना
वक्रोक्ति-सिद्धांत एवं अन्य काव्य-तत्व
इकाई 5. औचित्य- सम्प्रदाय
औचित्य सिद्धांत के प्रवर्तक, स्थापना और महत्त्व

अनुमोदित ग्रन्थ :-

काव्यशास्त्र की भूमिका	डॉ. नगेन्द्र
भारतीय काव्यशास्त्र	सत्यदेव चौधरी
साहित्य चिंतन	देवेन्द्र इस्सर
साहित्य सिद्धांत	रेनेवेलेक व ऑस्टिन वारेन
रस सिद्धांत का पुनर्विवेचन	डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त
भारतीय साहित्यशास्त्र	बलदेव उपाध्याय
संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य-कव्यशास्त्र	गोपीचंद नारंग
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन	सत्यदेव चौधरी एवं शांतिस्वरूप चौधरी
काव्यशास्त्र	भगीरथ मिश्र
भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र	गणपतिचन्द्र गुप्त

पाठ्यक्रम 8 : प्रयोजन मूलक हिंदी, COURSE CODE – MAHIN – 203, क्रेडिट 5
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :
- प्रयोजनमूलक हिन्दी की संकल्पना, विविध रूपों एवं प्रयुक्ति क्षेत्रों का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
-हिन्दी भाषा की विभिन्न प्रयुक्तियों, स्वरूप तथा व्यवहार क्षेत्र का ज्ञान।
- कार्यालीन हिन्दी के स्वरूप, प्रयोग क्षेत्र, प्रशासनिक प्रारूप, एवं भाषा-स्वरूप के नियमों का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- जनसंचार का अर्थ, विभिन्न माध्यम एवं रूप , माध्यमों के भेद, भाषिक-प्रकृति का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।
पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):
-प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रकृति एवं महत्व की समझ विकसित होगी।
-प्रयोजनमूलक हिन्दी के सैद्धांतिक एवं विश्लेषणात्मक ज्ञान का विकास होगा।
-राजभाषा आधिकारी के अभ्यर्थी, कार्यालयी हिन्दी के ज्ञान द्वारा अवसर प्राप्त कर सकेंगे।
-मीडिया एवं जनसंचार में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के अभिप्रेरण में उपयोगी होगा एवं रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

इकाई 1. प्रयोजनमूलक हिंदी : अभिप्राय और परिव्याप्ति एवं प्रयोगात्मक क्षेत्र
इकाई 2. प्रयोजनमूलक प्रयुक्तियां एवं व्यवहार क्षेत्र
कार्यालयी, वाणिज्यिक, विधि, बैंकिंग, वैज्ञानिक और तकनीकी, सामाजिक विज्ञान, संचार माध्यम, विज्ञापन, पत्रकारिता
इकाई 3. कार्यालयी हिंदी के अनुप्रयुक्ति क्षेत्र, पत्र-लेखन एवं उसके प्रकार
प्रारूप लेखन, टिप्पण, प्रतिवेदन और परिपत्र
इकाई 4. पारिभाषिक शब्दावली : निर्माण के सिद्धांत एवं प्रक्रिया
तात्पर्य, लक्षण एवं विशेषताएं, निर्माण के सिद्धांत, भिन्न प्रयुक्ति क्षेत्र
इकाई 5. जनसंचार माध्यम
जनसंचार : अभिप्राय और महत्त्व
जनसंचार लेखन के विविध रूप
जनसंचार लेखन की भाषा

अनुमोदित ग्रन्थ - :

प्रयोजन मूलक हिंदी	दंगल झाल्टे
हिंदी भाषा	हरदेव बाहरी
पुरानी हिंदी	चंद्रधर शर्मा गुलेरी
भारत की भाषा समस्या	रामविलास शर्मा
हिंदी भाषा में अपभ्रंश का योग	नामवर सिंह
हिंदी भाषा का उद्भव और विकास	उदयनारायण तिवारी

पाठ्यक्रम 9 : भाषा-विज्ञान, COURSE CODE – MAHIN – 204, क्रेडिट 5
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :
- भाषा-विज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, परिभाषा, विविध रूपों का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
-संरचनात्मक भाषा-विज्ञान एवं प्रमुख शाखाओं का विशिष्ट ज्ञान।
-भाषा, भाषिक-वर्गीकरण का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।
-ध्वनि-विज्ञान के अंतर्गत स्वर-व्यंजन ध्वनि भेद, स्वन, स्वनिम एवं संस्वन की संकल्पना का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।
-रूप-विज्ञान के अंतर्गत रूप की परिभाषा, रूपिम की संकल्पना, शब्द और अर्थ, शब्द की रचना-प्रक्रिया, पदबंध के स्तर, वर्गीकरण और प्रकार्य का विशिष्ट ज्ञान।
-अर्थ-विज्ञान के अंतर्गत अर्थ का तात्पर्य, प्रकृति, संरचना, शब्द और अर्थ का संबंध, अनेकार्थता, पर्याय आदि का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):
-भाषा-विज्ञान एवं उसके उपांगों का ज्ञान होगा। हिन्दी की प्रकृति एवं महत्व की समझ विकसित होगी।
-अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान में रुचि रखने वाले विद्यार्थी इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर तलाश सकेंगे।

इकाई 1. भाषा
भाषा की परिभाषा और विशेषताएं
भाषिक संरचना के विविध स्तर- अर्थ, प्रोक्ति, वाक्य, रूप और शब्द
भाषा के विविध रूप : मूल भाषा, बोली, मानक भाषा, सम्पर्क भाषा और राजभाषा
इकाई 2. भाषा-विज्ञान
भाषा-विज्ञान : परिभाषा एवं स्वरूप
भाषा-विज्ञान की प्रमुख शाखाएं : सामान्य परिचय
इकाई 3. भाषाओं का वर्गीकरण
भाषाओं का वर्गीकरण और आधार
आधुनिक भारतीय भाषाओं का सामान्य परिचय
इकाई 4. ध्वनि विज्ञान
तात्पर्य एवं ध्वनि अध्ययन के आधार - ध्वनि विज्ञान से
स्वनिम विज्ञान
ध्वनि परिवर्तन के कारण
इकाई 5. रूप विज्ञानं और अर्थ विज्ञान
रूप विज्ञान से तात्पर्य एवं संकल्पना
रूप परिवर्तन के कारण
अर्थ विज्ञान से तात्पर्य
अनुमोदित ग्रन्थ :-

भाषा विज्ञान की भूमिका	देवेन्द्रनाथ शर्मा
भाषा-विज्ञान और भाषा-शास्त्र	कपिलदेव द्विवेदी
भाषा शास्त्र और हिंदी भाषा की रूपरेखा	देवेन्द्र कुमार शास्त्री
भाषा और भाषा-विज्ञान	हनुमान प्रसाद शुक्ल
सामान्य भाषा विज्ञान	बाबुराम सक्सेना
भाषा विज्ञान : हिंदी भाषा और लिपि	राम किशोर शर्मा
भाषा-विज्ञान	भोलानाथ तिवारी
हिंदी भाषा की संरचना	मुकेश अग्रवाल
भाषाशास्त्र की भूमिका	उदयनारायण तिवारी
भाषा-विज्ञान	रघुवंशमणि पाठक

पाठ्यक्रम 10 – हिंदी साहित्य में अस्मितामूलक विमर्श, COURSE CODE – MAHIN – 205, क्रेडिट – 2
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :
- अस्मितमूलक विमर्श का अर्थ एवं स्वरूप, सैद्धांतिकी, उद्भव एवं विकास, भारतीय तथा पाश्चात्य संदर्भों का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
-विविध विमर्शों-दलित, स्त्री एवं आदिवासी विमर्शों की अवधारणात्मक संकल्पना, पृष्ठभूमि, विविधता का विशिष्ट ज्ञान।
-विविध साहित्यिक विधाओं में व्यक्त विमर्श-लेखन की चुनिंदा और प्रमुख रचनाओं का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।
पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):
-इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी साहित्य के क्षेत्र में नवीन अध्ययन क्षेत्रों से परिचित हो सकेंगे।
-विभिन्न अस्मिताओं का ज्ञान प्राप्त होगा।
-अस्मिता की निर्मिति, विभेदन, इतिहास और अवधारणाओं की समझ विकसित कर सकेंगे।
-विविध विमर्शों के ज़रिए सामाजिक-विविधता समझ सकेंगे एवं विमर्शमूलक अध्ययन के महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।

यूनिट 1: विमर्शों की सैद्धांतिकी
(क) दलित विमर्श – अवधारणा और फूले-अम्बेडकर
(ख) स्त्री विमर्श – अवधारणाएं और मुक्ति आंदोलन (विदेशी और देशी), रेडिकल, मार्क्सवादी, उदारवादी, यौनिकता, लिंगभेद, पितृसत्ता व समलैंगिकता
(ग) आदिवासी विमर्श – अवधारणा और आंदोलन, जल, जंगल, जमीन व पहचान का सवाल
यूनिट 2: हिंदी साहित्य –
कविता-
(क) सात भाइयों के बीच चम्पा (स्त्री विमर्श) – कात्यायनी
(ख) सोनवा का पिंजरा (दलित विमर्श) – माता प्रसाद
(ग) पत्थलगड़ी की औरतें (आदिवासी विमर्श) – वंदना टेटे
कहानी –
(क) सलाम (दलित विमर्श) – ओमप्रकाश वाल्मीकि
(ख) नौमाई (आदिवासी विमर्श) – जमुना बीनी
(ग) छावनी में बेघर (स्त्री विमर्श) – अल्पना मिश्र
उपन्यास –
(क) छैला संदु – मंगल सिंह मुंडा
आत्मकथा –
(क) मूर्दहिया – तुलसीराम

अनुमोदित ग्रंथ –
1. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य – मंदाकिनी मीणा व अनिरुद्ध कुमार 'सुधांशु'
2. दलित साहित्य की अवधारणा – वीर भारत तलवार
3. चिंतन की परम्परा और दलित साहित्य – श्योराज सिंह बेचैन
4. भारतीय दलित साहित्य आंदोलन – एक संक्षिप्त इतिहास – मोहनदास नैमिशराय
5. ताकि बचा रहे लोकतंत्र – रवीन्द्र प्रभात
6. दलित साहित्य के प्रतिमान – एन सिंह
7. अपने घर की तलाश में – निर्मला पुतुल
8. कलम को दर्द कहने दो – कर्मशील भारती
9. आज का दलित साहित्य – तेज सिंह

10. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र – शरण कुमार लिम्बाले
11. दलिस साहित्य का सौंदर्यशास्त्र – ओमप्रकाश वाल्मीकि
12. दलित विमर्श की भूमिका – कंवल भारती
13. आदिवासी साहित्य विमर्श – गंगा सहाय मीणा
14. नई सदी की पहचान – श्रेष्ठ महिला कथाकार – ममता कालिया
15. आदिवासी दर्शन और साहित्य – वंदना टेटे
16. दलित साहित्य – वेदना और विद्रोह – शरण कुमार लिम्बाले
17. अयाचित अतिथि और अन्य कहानियां – जमुना बीनी
18. झारखंड के आदिवासियों के बीच – एक एक्टिविस्ट के नोट – वीर भारत तलवार
19. झारखंड आंदोलन के दस्तावेज – वीर भारत तलवार
20. झारखंड में मेरे समकालीन – वीर भारत तलवार

<u>सत्र 3 –</u>

पाठ्यक्रम 11: हिंदी साहित्य का इतिहास-3, COURSE CODE – MAHIN – 301, क्रेडिट 5

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

-हिन्दी साहित्य के इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

-आधुनिक काल की समय-सीमा, अवधारणा, उदय एवं विकास की पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

-हिन्दी नवजागरण की तात्कालिक परिस्थितियों का अवलोकन एवं महत्व का विसलेषणात्मक अध्ययन।

-विभिन्न काव्य-आंदोलनों यथा, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता एवं समकालीन कविता के प्रमुख कवियों तथा काव्यगत, शिल्पगत प्रवृत्तियों का विशिष्ट ज्ञान प्रदान करना।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

-हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल की समझ विकसित होगी।

-आधुनिक काल के अंतर्गत आने वाले विभिन्न काव्यआंदोलनों का ज्ञान प्राप्त होगा।

-प्रमुख कवियों के काव्यगत एवं शिल्पगत विशेषताओं का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई 1. आधुनिक काल
आधुनिकता की अवधारणा
हिंदी नवजागरण : अवधारणा एवं विकास

इकाई 2. भारतेंदु युग एवं द्विवेदी युग की प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि एवं कृतियाँ

इकाई 3. छायावाद की प्रवृत्तियां, प्रमुख कवि एवं कृतियाँ

इकाई 4. प्रगतिवाद और प्रयोगवाद की प्रवृत्तियां, प्रमुख कवि एवं कृतियां

इकाई 5. नयी कविता और समकालीन कविता की प्रवृत्तियां, प्रमुख कवि एवं कृतियाँ

अनुमोदित ग्रन्थ :-

हिंदी साहित्य का इतिहास	सं. डॉ. नगेन्द्र
आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां	नामवर सिंह
छायावाद	नामवर सिंह
कविता के नए प्रतिमान	नामवर सिंह
नयी कविता का आत्मसंघर्ष	मुक्तिबोध
हिंदी साहित्य का इतिहास	सं. डॉ. नगेन्द्र
हिंदी साहित्य और संवेदना का इतिहास	रामस्वरूप चतुर्वेदी
हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास	बच्चन सिंह
लम्बी कविताओं का रचना-विधान	सं. नरेंद्र मोहन
फिलहाल	अशोक वाजपेयी
निराला की साहित्य साधना	रामविलास शर्मा
कामायनी : एक पुनर्विचार	मुक्तिबोध
सुमित्रानंदन पन्त	डॉ. नगेन्द्र
महादेवी वर्मा	इंद्रनाथ मदान
नयी कविता के अंक	सं. जगदीश गुप्त

पाठ्यक्रम 12 : हिंदी गद्य – विविध विधाएँ, COURSE CODE – MAHIN – 302 क्रेडिट-5
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :
-हिन्दी गद्य की विविध विधाओं एवं इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
-हिन्दी गद्य की विविध विधाओं के रचनाकारों उनकी कृतियों का विशिष्ट ज्ञान।
-हिन्दी गद्य कि विविध विधाओं के भाषिक एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):
-हिन्दी साहित्य अंतर्गत विविध गद्य विधाओं की प्रमुख रचनाकारों एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त होगा।
-विविध विधाओं की जानकारी हासिल कर विद्यार्थीगण अपने सृजनात्मक लेखन कौशल का विकास कर पाएंगे।

इकाई 1. रिपोर्ताज और व्यंग्य का सामान्य परिचय और इतिहास
इकाई 2. रेखाचित्र और संस्मरण का सामान्य परिचय और इतिहास
इकाई 3. पत्र-साहित्य और आत्मकथा का समान्य परिचय और इतिहास
इकाई 4. जीवनी और यात्रा-वृतांत का सामान्य परिचय और इतिहास
इकाई 5. डायरी और निबंध का सामान्य परिचय और इतिहास

अनुमोदित ग्रन्थ :-

आधुनिक हिंदी साहित्य	लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
हिंदी का गद्य साहित्य	रामचंद्र तिवारी
आधुनिक साहित्य	नन्द दुलारे वाजपेयी
हिंदी गद्य का उद्भव और विकास	विजयेन्द्र स्नातक
साहित्य में गद्य की नयी विविध विधाएँ	कैलाशचंद भाटिया
आधुनिक साहित्य का इतिहास	बच्चन सिंह
काव्य के रूप	गुलाब राय
आधुनिक गद्य की विधाएँ	उदयभानु सिंह
साहित्यिक विधाएँ : पुनर्विचार	हरिमोहन
भारतीय समीक्षा सिद्धांत	सूर्यनारायण द्विवेदी

पाठ्यक्रम 13 : अनुवाद और हिंदी साहित्य, COURSE CODE – MAHIN – 303, क्रेडिट-5
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :
-अनुवाद के अर्थ एवं स्वरूप, विभिन्न परिभाषाओं का अनुशीलन एवं वर्तमान में अनुवाद के महत्व एवं प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
-अनुवाद के विभिन्न प्रकारों, शैलियों, अनुवाद के साधन-उपकरण, स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के महत्व का रेखांकन एवं अनुवाद का आकलन एवं मूल्यांकन।
पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):
-वर्तमान भूमंडलीकृत परिस्थितियों में अनुवाद के महत्व की समझ विकसित होगी।
-अनुवाद अध्ययन में रुचि रखने वाले विद्यार्थीगण प्रेरित होंगे तथा इसे अपने कार्यक्षेत्र के रूप में स्वीकारेंगे।
-अनुवाद, अनुवादक एवं अनुवाद के विविध साधन-उपकरण के महत्व को स्थापित कर सकेंगे।

इकाई 1. अनुवाद : प्रविधि, सिद्धांत और
अनुवाद शब्द एवं अर्थ की व्युत्पत्ति, इतिहास
विविध परिभाषाएं, अनुवाद का स्वरूप
अनुवाद की प्रासंगिकता
इकाई 2. अनुवाद : प्रकार और शैलियाँ
माध्यम के आधार पर
प्रक्रिया के आधार पर
पाठ के आधार पर
तर्भाषिक अनुवाद, अन्तः भाषिक अनुवाद, पाठ अनुवाद, आशु अनुवाद, शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद
इकाई 3. अनुवाद के साधन-उपकरण
कोश-प्रकार
कोश का उपयोग
कोश निर्माण और कंप्यूटर
इकाई 4. अनुवाद : स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा
व्यतिरेकी विशेषण और अनुवाद
अनुवाद : जोड़ और घटाव का विवेक
अनुवाद : सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ
अनुवाद : विज्ञान, कथा या शिल्प
इकाई 5. अनुवाद : पुनरीक्षण, मूल्यांकन और समीक्षा
पुनरीक्षण, अनुवाद-मूल्यांकन और अनुवाद-समीक्षा

अनुमोदित ग्रन्थ :-

अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा	डॉ. सुरेश कुमार
अनुवाद के भाषिक पक्ष	विभा गुप्ता
अनुवाद-कार्यदक्षता	डॉ. महेन्द्रनाथ दुबे
अनुवाद क्या है	डॉ. भ.ह. राजुरकर/डॉ. राजमल
प्रयोजनमूलक हिंदी	दगल झाल्टे
अनुवाद और रचना का उत्तर-जीवन	डॉ. रमण सिन्हा
अनुवाद मूल्य और मूल्यांकन	प्रो. शशि मुदिराज
अनुवाद विज्ञान – सिद्धांत एवं प्रविधि	भोलानाथ तिवारी

पाठ्यक्रम – 14 भक्तिकालीन काव्य, COURSE CODE – MAHIN – 304, क्रेडिट-5

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

-हिन्दी साहित्य के मध्यकालीन इतिहास एवं काव्य का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

-प्रमुख मध्यकालीन कवियों- कबीर, जायसी, सूर, तुलसी और मीरा के काव्यात्मक अवदान एवं महत्व का अध्ययन।

- कबीर, जायसी, सूर, तुलसी और मीरा के काव्य साहित्य का अध्ययन।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

-हिन्दी साहित्य के मध्यकालीन काव्य का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

-इन कवियों के हवाले से भक्ति की विभिन्न धाराओं की काव्यगत विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त होगा।

-प्रमुख कवियों के काव्य के भाषा एवं शिल्पगत विशेषताओं का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई 1. कबीरदास

पद –
हमारे गुरु दीन्ही अजब जरी
दुलहिनी गावहु मंगलाचार
संतो ई मुर्दन के गाँव
हम न मरिहैं मरिहैं संसारा
साखियाँ :
सतगुरु मेरा सुरिवाँ
जाके मुंह माथा नहीं
पानी ही ते हिम भया

इकाई 2. जायसी

मानसरोवर खंड (जायसी ग्रंथावली, सं. रामचंद्र शुक्ल)

इकाई 3. सूरदास

अविगत गति कछु कहत न आवै
बुझत श्याम कौन तू गोरी
आये जोग सिखावन पाण्डेय
अंखिया हरि दर्शन की भूखीं

इकाई 4. तुलसीदास :

अयोध्याकांड (रामचरितमानस)
चलत प्यादें खात फल....से लेकर सैल सभा निरखि (छन्द 222 से 236 तक)

इकाई 5. मीराबाई

बसो मेरे नैनन में नंदलाल
नहीं सुख भावे थारो देसलडो रंगरुडो
पग बाँध घुंघयां णच्यांरी

अनुमोदित ग्रन्थ :

मध्यकालीन बोध का स्वरुप	हजारी प्रसाद द्विवेदी
सूरदास	रामचंद्र शुक्ल
भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य	मेनेजर पाण्डेय
तुलसी	रामचंद्र शुक्ल
तुलसी	उदयभानु सिंह
कबीर	हजारी प्रसाद द्विवेदी

जायसी	विजयदेव नारायण शाही
जायसी	सं. सदानंद साही
पद्मावत का मूल्यांकन	डॉ. जगदीश श्रीवास्तव
सूफी मत : साधना और साहित्य	रामपूजन तिवारी
हिंदी काव्य की निर्गुण धारा में भक्ति	श्यामसुंदर शुक्ल
अकथ कहानी प्रेम की	पुरुषोत्तम अग्रवाल
मीरा का काव्य	विश्वनाथ त्रिपाठी

पाठ्यक्रम 15 – हिंदी निबंध, COURSE CODE – MAHIN – 305, क्रेडिट-2

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

-हिन्दी गद्य साहित्य के अंतर्गत निबंध विधा के ऐतिहासिक विकास एवं विविध पहलुओं का ज्ञान प्रदान करना।

-प्रमुख निबंधकारों का परिचय एवं उनके अवदान एवं महत्व का अध्ययन।

-प्रमुख निबंधकारों के चयनित निबंधों का विशिष्ट अध्ययन।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

-हिन्दी गद्य साहित्य के निबंध विधा का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

-विद्यार्थी में गद्य लेखन की क्षमता का विकास होगा।

-निबंध का सामाजिक परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन एवं उतरोत्तर स्वरूप में परिवर्तन का मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाई 1.

बातचीत - बालकृष्ण भट्ट
दुराशा : बालमुकुन्द गुप्त
नाख़ून क्यों बढ़ते हैं - हजारी प्रसाद द्विवेदी

इकाई 2.

संस्कृति और जातीयता– रामविलास शर्मा
लोभ और प्रीति – रामचन्द्र शुक्ल
तीसरे दर्जे का श्रद्धेय - हरिशंकर परसाई

अनुमोदित ग्रन्थ :-

निबंध निलय	सतेन्द्र
हिंदी साहित्यकोश भाग-2	सं. धीरेन्द्र वर्मा
हिंदी निबंध और निबंधकार	रामचंद्र तिवारी
निबंध और निबंध	त्रिपाठी उमाकांत
हिंदी गद्य : विन्यास और विकास	रामस्वरूप चतुर्वेदी

व्यावसायिक पाठ्यक्रम
पाठ्यक्रम– 16 -हिंदी सिनेमा और साहित्य,COURSE CODE- MAHIN – 306, क्रेडिट – 2
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :
-हिन्दी सिनेमा और साहित्य के विश्लेषणात्मक ज्ञान।
-हिन्दी सिनेमा और साहित्य की प्रस्तुति माध्यमों का व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करना।
पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):
- सिनेमा के साहित्य के अंतरसंबंध की सैद्धांतिक समझ विकसित कर सकेंगे।
- तकनीक को जान-समझकर इस क्षेत्र में रोजगार की ओर बढ़ेंगे। उनमें कौशल का विकास होगा।
- सिनेमा और साहित्य जगत के विश्लेषण की क्षमता पैदा होगी।
यूनिट 1:

सिनेमा का स्वरूप
सिनेमा का उद्भव
कैमरे की भूमिका
दर्शक और स्क्रीन का सम्बन्ध
सिनेमा के प्रकार – कथात्मक, प्रयोगात्मक, कला और दस्तावेजी
सिनेमा का इतिहास
सिनेमा का आरंभिक युग
सन् साठ के बाद का न्यू वेब सिनेमा
इन्टरनेट और सिनेमा के नए रूप

यूनिट 2:

सिनेमा और साहित्य का सम्बन्ध
गोदान – विशेष अध्ययन
साहित्यिक कृतियों पर बनी हिंदी फिल्में – रजनीगंधा, तीसरी कसम और शतरंज के खिलाड़ी

अनुमोदित ग्रंथ –
लेखक का सिनेमा – कुंवर नारायण
पटकथा – मनोहर श्याम जोशी
Film Theory – An Introduction through the Senses – Thomas Elsaesser and Maite Hagener
हिंदी सिनेमा – सदी का सफर – अनिल भार्गव
सिनेमा और आहित्य – सुनील कुमार तिवारी
सिनेमा और समाज – पूरणचंद टंडन
भारतीय सिनेमा का सफरनामा – जयसिंह
सिनेमा का समय और इतिहास – संजीव श्रीवास्तव
सिनेमा का जादुई सफर – प्रताप सिंह

<u>सत्र 4 –</u>

पाठ्यक्रम 17 : पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिंदी आलोचना, COURSE CODE – MAHIN – 401, क्रेडिट-5

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

-पाश्चात्य एवं हिन्दी आलोचनात्मक चिंतन का सैद्धांतिक एवं ऐतिहासिक अवलोकन ।

- पाश्चात्य साहित्यालोचन की परंपरा एवं प्रमुख विद्वानों के सिद्धांत का विशिष्ट ज्ञान प्रदान करना।

-हिन्दी साहित्यालोचन के सैद्धांतिक पक्ष एवं परंपरा का अवलोकन। प्रमुख प्रवृत्तियों एवं प्रमुख हिन्दी साहित्यालोचकों का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

- पाश्चात्य एवं हिन्दी आलोचना के सैद्धांतिक पक्ष की समझ विकसित कर सकेंगे।

- पाश्चात्य एवं हिन्दी आलोचना के प्रमुख आलोचकों एवं सिद्धांतकारों की स्थापनाओं से परिचित हो सकेंगे।

-आलोचना के पारिभाषिक शब्दावली से परिचित हो सकेंगे जिससे आलोचनात्मक लेखन की ओर विद्यार्थी प्रवृत हो सकेंगे।

इकाई 1. पाश्चात्य साहित्यालोचन के विकास का सामान्य परिचय
प्लेटो : काव्य-दृष्टि

इकाई 2. अरस्तु : अनुकरण सिद्धांत, विरेचन सिद्धांत
लौन्जाइनस : उदात्त की अवधारणा

इकाई 3. टी.एस. इलियट : निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, परम्परा और वैयक्तिक प्रज्ञा का सिद्धांत
आई.ए.रिचर्डस : सम्प्रेष्ण सिद्धांत

इकाई 4. हिंदी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियां- अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद, मार्क्सवाद

इकाई 5. रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नन्द दुलारे वाजपेयी, राम विलास शर्मा

अनुमोदित ग्रन्थ :-

नयी समीक्षा के प्रतिमान	निर्मला जैन
साहित्य चिंतन	देवेंद्र इस्सर
पाश्चात्य साहित्य चिंतन	निर्मला जैन, कुसुम बांठिया
मार्क्सवाद क्या है	यशपाल
आज के जमाने में मार्क्सवाद का महत्व	एजाज अहमद
संरचना, उत्तर संरचनावाद और प्राच्य-काव्यशास्त्र	गोपीचंद नारंग
मार्क्सवादी साहित्य चिंतन	डॉ. शिवकुमार मिश्र
आधुनिक परिवेश और अस्तित्ववाद	शिवप्रसाद सिंह
अस्तित्ववाद और मानववाद	ज्यां पाल सार्त्र
आधुनिकतावाद और साहित्य	दुर्गा प्रसाद गुप्त
आधुनिकतावाद	दुर्गा प्रसाद गुप्त
उत्तर-संरचनावाद और उत्तर-आधुनिकता	सुधीश पचौरी
साहित्य सिद्धांत	रेनवेलेक, ऑस्टिन वारेन
उत्तर-आधुनिकता : विभ्रम और यथार्थ	रवि श्रीवास्तव
आधुनिकतावाद और यथार्थवाद	दुर्गा प्रसाद गुप्त

पाठ्यक्रम 18 : कथा-साहित्य, COURSE CODE – MAHIN – 402, क्रेडिट-5
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :
-हिन्दी कहानी और उपन्यास के विकास का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
-प्रेमचंद पूर्व, प्रेमचंद युगीन, प्रेमचंदोत्तर उपन्यास एवं समकालीन उपन्यासों का ज्ञान प्रदान करना।
-चयनित कहानियों एवं उपन्यासों का विशिष्ट गहन अध्ययन। इस माध्यम से कथा-साहित्य में आए परिवर्तन, विभिन्न आंदोलन,महत्व एवं वैशिष्ट्य का अवलोकन एवं आकलन करना।
पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):
- हिन्दी कथा साहित्य के सैद्धांतिक एवं ऐतिहासिक समझ को विकसित कर सकेंगे।
- हिन्दी कथासाहित्य के विभिन्न विकासशील चरणों के ज्ञान से कथा साहित्य के महत्व को जान सकेंगे।
- हिन्दी कथा साहित्य की भाषा और शिल्पगत विशेषताओं को व्याख्यायित करने की क्षमता पैदा होगी।

इकाई 1. हिंदी उपन्यास का विकास
प्रारंभिक उपन्यास, प्रेमचन्दयुगीन उपन्यास
प्रेमचंदोत्तर उपन्यास, समकालीन उपन्यास
इकाई 2. हिंदी उपन्यास
प्रेमचंद : गोदान
अज्ञेय : शेखर एक जीवनी भाग-1
इकाई 3. कहानी का विकास
स्वतंत्रता पूर्व कहानी
स्वातंत्र्योत्तर कहानी
इकाई 4. चंद्रधर शर्मा गुलेरी : उसने कहा था
प्रेमचंद : कफ़न
रेणु : तीसरी कसम
इकाई 5. कमलेश्वर : डिप्टी कलेक्टरी
भीष्म साहनी : चीफ की दावत
अमरकान्त : दोपहर का भोजन

अनुमोदित ग्रन्थ :-

कहानी : नयी कहानी	नामवर सिंह
आज की हिंदी कहानी	विजय मोहन सिंह
नयी कहानी : संदर्भ और प्रकृति	देवीशंकर अवस्थी
कुछ कहानियां – कुछ विचार	विश्वनाथ त्रिपाठी
कहानी : समकालीन चुनौतियां	शम्भू गुप्त
हिंदी कहानी : अस्मिता की तलाश	मधुरेश
समकालीन कहानी का रचना विधान	गंगा प्रसाद विमल
हिंदी कहानी : अंतरंग पहचान	रामदरश मिश्र
समकालीन हिंदी कहानी	पुष्पपाल सिंह
कहानी समय	कृष्णमोहन
उपन्यास का उदय	आयन वॉट
हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा	रामदरश मिश्र
हिंदी उपन्यास - पहचान और परख	इन्द्रनाथ मदान
हिंदी उपन्यास : 1950 के बाद	सं. निर्मला जैन
उपन्यास और लोकजीवन	राल्फ फॉक्स

हिंदी उपन्यास का विकास	श्रीधरम
उपन्यास का पुनर्जन्म	परमानन्द श्रीवास्तव
हिंदी उपन्यास : गति और स्थिति	चंद्रकांत वान्दिवडेकर
हिंदी उपन्यास का इतिहास	गोपाल राय

पाठ्यक्रम 19 : छायावादोत्तर कविता, COURSE CODE – MAHIN – 403, क्रेडिट-5
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :
- उत्तर छायावादी कविता का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- उत्तर छायावादी कविता के विभिन्न धाराओं एवं उनकी विशेषताओं बारे में ज्ञान प्रदान करना।
- उत्तर छायावादी कविता के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाओं विश्लेषणात्मक ज्ञान।
पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):
- उत्तर छायावादी कविता के सैद्धांतिक एवं ऐतिहासिक समझ को विकसित कर सकेंगे।
- उत्तर छायावादी कविता के विभिन्न धाराओं, प्रमुख कवियों एवं उनकी रचनाओं के बारे मे जान सकेंगे तथा उनके महत्व को रेखांकित कर सकेंगे।

इकाई 1. परिचय
रामधारी सिंह 'दिनकर' : तृतीय सर्ग, रश्मिरथी
इकाई 2. नागार्जुन : अकाल और उसके बाद, हरिजन गाथा, सिंदुर तिलकित भाल
केदारनाथ अग्रवाल : ये धरती है उस किसान की, कल कमीज में बटन नहीं थे और मजदूर का जन्म
इकाई 3. अज्ञेय : यह दीप अकेला, बावरा अहेरी और नदी के द्वीप
शमशेर : लौट आ ओ धार, घिर गया है समय का रथ, एक पीली शाम और टूटी हुई बिखरी हुई
इकाई 4. मुक्तिबोध : भूल-गलती, मुझे कदम-कदम पर और ब्रम्हराक्षस
रघुवीर सहाय : रामदास, मुझे कुछ और करना था, अधिनायक, नेता क्षमा करें
इकाई 5. धूमिल : मोचीराम, रोटी और संसद औ पटकथा
दुष्यंत : साये में धूप से कुछ चुनिन्दा ग़ज़लें

अनुमोदित ग्रन्थ-:

छायावादोत्तर हिंदी कविता की प्रवृत्तियां	त्रिलोचन पांडेय
कविता के नए प्रतिमान	नामवर सिंह
आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां	नामवर सिंह
तारसप्तक की भूमिका	अज्ञेय
नयी कविता और अस्तित्ववाद	रामविलास शर्मा
विपक्ष का कवि धूमिल	राहुल
मुक्तिबोध की कविताई	अशोक चक्रधर
अज्ञेय : कवि और काव्य	राजेंद्र प्रसाद
त्रिलोचन के बारे में	सं. गोबिंद प्रसाद
केदारनाथ सिंह : बिम्ब से आख्यान तक	गोबिंद प्रसाद
समकालीन कविता	विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी
हिंदी साहित्य : बीसवीं शताब्दी	नंददुलारे वाजपेयी
आधुनिक हिंदी साहित्य	नंददुलारे वाजपेयी

पाठ्यक्रम 20 : लोक-साहित्य, COURSE CODE – MAHIN – 404, क्रेडिट-2
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :
- लोक और लोक साहित्य का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
-लोक साहित्य एवं मुख्यधारा के साहित्य के भेद के बारे में ज्ञान प्रदान करना ।
-लोक के विभिन्न प्रकारों एवं उनके महत्व का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):
- हिन्दी लोक साहित्य के सैद्धांतिक एवं ऐतिहासिक समझ को विकसित कर सकेंगे।
- हिन्दी लोक साहित्य के विविध पहलुओं एवं प्रकारों तथा उनके महत्व को रेखांकित कर सकेंगे।

इकाई 1. लोक साहित्य की अवधारणा
लोक साहित्य : परिभाषा एवं विशेषता
लोक, लोकवार्ता, लोक-संस्कृति, लोक-साहित्य
इकाई 2. लोक साहित्य के प्रकार
लोक गीत, लोकनाट्य, लोक-कथा

अनुमोदित ग्रन्थ :-

लोक साहित्य की भूमिका	कृष्णदेव उपाध्याय
लोक संस्कृति की रूपरेखा	कृष्णदेव उपाध्याय
लोक साहित्य का अध्ययन	त्रिलोचन पाण्डेय
कविता कौमुदी	रामनरेश त्रिपाठी
आदि हिंदी के गीत और कहानियाँ	राहुल सांकृत्यायन
लोक साहित्य और लोक स्वर	विद्यानिवास मिश्र
लोक साहित्य	श्याम परमार
लोक साहित्य की भूमिका	प्रो. रवीन्द्र भ्रमर
लोक सांस्कृत्यायन और राष्ट्रवाद	बद्रीनारायण

पाठ्यक्रम 21 : वैकल्पिक विषय, COURSE CODE – MAHIN – 405, क्रेडिट-5
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :
- कालखंड से इतर, हिन्दी साहित्य के प्रमुख व्यक्तित्वों-कवियों एवं उपन्यासकार के साहित्य का गहन एवं विस्तृत विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- कबीर के विभिन्न रूपों जैसे युग प्रवर्तक साहित्यकार, संत, आलोचक, विद्वान, समाज-वैज्ञानिक एवं धार्मिक विचारक आदि का ज्ञान प्रदान करना ।
- प्रेमचंद के व्यक्तित्व और कृतित्व केविस्तृत फलक को प्रस्तुत करना तथा उनके महत्व का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
-सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के वैविध्यपूर्ण सृजनशील पक्षों जैसे कवि, उपन्यासकार, कहानीकार एवं निबंधकार से अवगत कराना।
-दिनकर के कवि एवं चिंतक रूप को विस्तृत रूप से परिचय कराना। उनके विपुल लेखन से अवगत कराना।
पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):
- हिन्दी के प्रमुख हस्ताक्षरों जिन्होंने अपने सृजन के माध्यम से हिन्दी साहित्य जगत को उन्नत किया, उसे दशा एवं दिशा प्रदान की, उनके बारे में जान सकेंगे।
- इन हस्ताक्षरों द्वारा रचित साहित्य के गहन अध्ययन उपरांत उनके साहित्यिक अवदान एवं महत्व को रेखांकित कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम 21 : (1) कबीर
इकाई 1. निर्गुण भक्ति काव्य की पूर्वपीठिका
कबीर का व्यक्तित्व और कृतित्व
संत काव्य परम्परा में कबीर का वैशिष्ट्य
कबीर के निर्गुण ब्रह्म का स्वरुप
इकाई 2. कबीर के काव्य का भाव पक्ष :
कबीर की भक्तिभावना
कबीर की रहस्य साधना
कबीर की दार्शनिक चेतना
कबीर के राम और तुलसी के राम
इकाई 3. कबीर की भाषा – कबीर का अभिव्यंजना पक्ष, अप्रस्तुत विधान एवं काव्य-रूप
इकाई 4. साखी : संख्या 1 से 50 तक
निर्धारित पाठ्यपुस्तक : 'कबीर ग्रंथावली' सम्पादक श्यामसुंदर दास
इकाई 5. दुलहिनी गावहु मंगलाचार
एक अचम्भा देखा रे भाई
हम न मरे मरिहै संसारा
हरि जननी मैं बालक तोरा
काहे री नलंनीं तू कमलिनी
संतो धोखा कासु कहिये
मन रे तन कागद का पुतरा
लोका मति के भोरा रे
इब न रहूँ माटी के घर में
मेरा तेरा मनुआं कैसे एक होई रे

अनुमोदित ग्रन्थ :-
कबीर ग्रंथावली सं. श्यामसुंदर दास

कबीर	हजारी प्रसाद द्विवेदी
संत कबीर	रामकुमार वर्मा
कबीर की खोज	सं. राजकिशोर
कबीर : बाज भी, कपोत भी, पपीहा भी	डॉ. धर्मवीर
कबीर के सबद	डॉ. शुकदेव सिंह
भये कबीर कबीर	डॉ. शुकदेव सिंह
अकथ कहानी प्रेम की	पुरुषोत्तम अग्रवाल
कबीर	सं विजेंद्र स्नातक

पाठ्यक्रम 21 : (2) प्रेमचंद क्रेडिट-5

इकाई 1. उपन्यास :

1. सेवासदन 2. कर्मभूमि

इकाई 2. निर्धारित उपन्यास :

1. निर्मला 2.रंगभूमि

इकाई 3. निर्धारित कहानियाँ

ईदगाह, मंत्र, नशा, बड़े भाई साहब, पूस की रात, शतरंज के खिलाड़ी, सद्गति

प्रस्तावित कहानी संग्रह : 'शतरंज के खिलाड़ी', सं. नन्दकिशोर आचार्य,
वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर

इकाई 4. निर्धारित कहानियाँ

सवा सेर गेंहू , बड़े घर की बेटी, पंच परमेश्वर, बूढी काकी, नमक का दारोगा, परीक्षा, कफ़न

इकाई 5. नाटक और अन्य विचार :

नाटक – कर्बला

निबंध - साहित्य का उद्देश्य

उपन्यास - महाजनी सभ्यता

राष्ट्रभाषा हिंदी और उसकी समस्याएँ

अनुमोदित ग्रन्थ :-

सेवा सदन	प्रेमचंद
कर्मभूमि	प्रेमचंद
प्रेमचंद : घर में	शिवरानी देवी
प्रेमचंद – एक विवेचन	इंद्रनाथ मदान
प्रेमचंद और उनका युग	रामविलास शर्मा
प्रेमचंद : कलम का सिपाही	अमृत राय
प्रेमचंद : साहित्यिक विवेचन	नन्द दुलारे वाजपेयी
प्रेमचंद : एक अध्ययन	राजेश्वर गुरु
प्रेमचंद: जीवन, कला और कृतित्व	हंसराज रहबर

पाठ्यक्रम 21 : (3) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' क्रेडिट-5

इकाई 1. निराला और उनका युग
निराला का व्यक्तित्व और कृतित्व
निराला की वैचारिक दृष्टि

इकाई 2. काव्य
राग विराग : सम्पादक – रामविलास शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

इकाई 3. उपन्यास
बिल्लेसुर बकरिहा: निराला, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

इकाई 4. कहानी
सुकुल की बीबी : निराला, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
चतुरी चमार : निराला, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

इकाई 5. निबंध
प्रबंध प्रतिमा - निराला, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
चाबुक : निराला, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

अनुमोदित ग्रन्थ :-

निराला की साहित्य साधना (तीन भाग)	रामविलास शर्मा
निराला : एक पुनर्मूल्यांकन	धनंजय वर्मा
निराला : एक आत्महंता आस्था	दूधनाथ सिंह
क्रांतिकारी कवि निराला	बच्चन सिंह
निराला की जातीय चेतना	नीरज कुमार

पाठ्यक्रम 21 : (4) रामधारी सिंह 'दिनकर' क्रेडिट-5

इकाई 1. दिनकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई 2. दिनकर : काव्य-साहित्य
प्रमुख काव्य रचनाएं, विविध काव्य विधाएँ

इकाई 3. दिनकर साहित्य गद्द -
प्रमुख गद्य रचनाएँ, विविध गद्द विधाएं

इकाई 4. दिनकर चिंतन पक्ष -
मिट्टी की ओर(1949), अर्धनारीश्वर(1952)
काव्य की भूमिका(1958), पन्त, प्रसाद और मैथिलीशरण(1958)
शुद्ध कविता की खोज (1966), साहित्यामुखी(1968),
आधुनिक बोध, संस्कृति के चार अध्याय
वटपीपल(1961),रेती के फूल(1952),वेणुवन(1978),चक्रवाल की भूमिका(2005)

इकाई 5. दिनकर सामग्री – निर्धारित पाठ –
काव्य- रश्मिरथी (तीसरा सर्ग)
काव्य- कुरुक्षेत्र (तीसरा सर्ग)

अनुमोदित ग्रन्थ :-

दिनकर – एक पुनर्मूल्यांकन	विजेंद्र नारायण सिंह
दिनकर : एक सहज पुरुष	शिवसागर मिश्र
दिनकर की साहित्यिक दृष्टि	सुशीला मिश्र
दिनकर का गद्य साहित्य	डॉ. प्रेमनाथ उपाध्याय
मिट्टी की ओर	रामधारी सिंह दिनकर
युगचारण दिनकर	सावित्री सिन्हा
संस्कृति के चार अध्याय	रामधारी सिंह दिनकर
दिनकर के काव्य में क्रन्तिमत चेतना	निधि भार्गव
दिनकर के काव्य में परम्परा और आधुनिकता	डॉ. जयसिंह नीरद
भारतीय साहित्य के निर्माता – रामधारी सिंह दिनकर	विजेंद्र नारायण सिंह
समय और संस्कृति	श्यामाचरण दूबे
रश्मिरथी	रामधारी सिंह दिनकर
दिनकर संचयिता	सं लक्ष्मीचंद्र जैन